SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

अंक-3, खण्ड-2, अप्रैल - जून 2025 E-ISSN : 2584-2900

भीष्म साहनी की कहानियों में सामाजिकता का अध्ययन

आशीष कुमार तिवारी
सह-प्राध्यापक (हिन्दी)
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सार

समकालीन कथा साहित्य में सामाजिक यथार्थ बोध की अभिव्यक्ति मुख्य रूप से कहानियों में जीवन के हर पहलू की वास्तविकता के साथ प्रकट हुई है।

स्वातन्त्रयोत्तर कथा साहित्य में भीष्म साहनी का नाम बड़े आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। भीष्म साहनी एक ऐसे कहानीकार है जिनकी कहानियों में समाज की सशक्त झाँकी प्रस्तुत की गई हैं।भीष्म साहनी साहित्य और कला की सोद्देश्यता स्वीकार करने वाले सशक्त साहित्यकार थे। भीष्म साहनी की कहानियाँ समाज के विभिन्न पहलुओं, जैसे कि विभाजन, जाति, धर्म, गरीबी, और स्त्री-पुरुष संबंध, को गहराई से चित्रित करती हैं। उनकी कहानियाँ सामाजिक यथार्थ के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं, और वे मानवीय मूल्यों के साथ-साथ सामाजिक असमानताओं को भी उजागर करती हैं।

बीज शब्द

प्रतिबद्धता, अभिव्यक्ति, आध्यात्मिकता, दृष्टिकोण,

प्रस्तावना

यदि साहित्य समाज का दर्पण है तो कथा साहित्य जीवन दर्शन का दर्पण है। जीवन दर्शन साहित्यकार के जीवन की आलोचना है। जीवन दर्शन से अभिप्राय है जीवन संबंधी दृष्टिकोण। इस अर्थ में जीवन दर्शन या कलाकार का जीवन एक विशिष्ट सत्य की ओर संकेत करता है। वह सत्य है कलाकार ने जीवन को कैसे पाया, उसके संबंध में क्या धारणा बनाई और जीवन को कैसा समझता है। संक्षेप में जीवन दर्शन कलाकार के जीवन की आलोचना है। आधुनिक हिंदी कथा की प्रगतिशील परंपरा में सामाजिक कहानियों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। जिनमें

सामाजिक जीवन की समस्याओं एवं विचारधाराओं की अभिव्यक्ति की गई है। इसमें जीवन दर्शनपरक विशेषताएं सम्मिलित की जाती हैं।सामाजिक जीवन दर्शन के अंतर्गत समाज के विभिन्न पहलुओं, उनकी मान्यताओं, रीति रिवाजों विभिन्न समस्याओं समाज की आर्थिक विषमताओं आदि पर लेखक के विचारों और दृष्टिकोण समाहित रहते हैं। सामाजिक जीवन दर्शन के अंतर्गत आध्यात्मिक और भौतिक दृष्टिकोण से समाज की समस्याओं पर विचार किया जाता है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र के अध्ययन के लक्ष्य एवं उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. भूमंडलीकरण और उदारीकरण के दौर में भीष्म साहनी की कहानियों में सामाजिकता की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
2. भीष्म साहनी को हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ कथाकार व समाज के जनसंचारक के रूप में स्थापित करना।

शोध पद्धति

इस शोधपत्र लिखने के लिए विवेचनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। इस शोध में द्वितीय स्त्रोतों का उपयोग किया गया है, जिसमें भीष्म साहनी के द्वारा लिखित अनकी कहानियों और उसकी आलोचना समाहित है।

शोध विस्तार

भीष्म साहनी की कहानियों में सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति मुख्य रूप में रही है,जिसमें जीवन के हर पहलू को वास्तविकता के साथ अभिव्यक्त किया गया है। समाज की यही परिवर्तन मूल्य दृष्टि साहनी जी की कहनियों में अभिव्यक्त हुई है उन्होंने अपने जीवन के अनुभव अपनी कहानियों में काल व परिवेश के साथ जोड़कर चित्रित किया हैं- “पहले के लेखक की एक अतिरिक्त सत्ता थी, इसीलिये वह रचना करता था। आज का लेखक रचना को झेलता है,

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
अंक-3, खण्ड-2, अप्रैल - जून 2025 E-ISSN : 2584-2900

क्योंकि हर जगह भागीदारी की हैसियत से वह विद्‌यमान रहता है।"[1] नये जीवन और मूल्यगत संकट और मानवीय संवेदनाओं के परिप्रेक्ष्य में साहनी जी ने बदली हुई जीवन स्थितियों और संबंधों में व्याप्त तनाव, विघटन और जटिलता को पहचान कर अपनी कहानियों में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। अनुभव के आधार पर सामाजिक यथार्थ का सूक्ष्म चित्रण कर हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद की परंपरा के अग्रणी लेखक माने जाते है। प्रेमचन्द की जनवादी परम्परा को हिन्दी कथा साहित्य में एक नयी कलम उगाने का सर्वप्रथम स्तुत्य कार्य भीष्म जी ने ही किया। भीष्म जी नई कहानी की प्रगतिशील धारा के कहानीकार है। वे सामाजिक भूमि पर टिकने का प्रयत्न अपनी कहानियों में करते है वे सामाजिक यथार्थ को समझाते हुए सामाजिक शक्तियों के द्‌वन्द्‌व की पहचान कराते है। वे बदलती हुई परस्थितियों को आत्मसात करते चलते हैं" पाली कहानी संवेदना के स्तर पर मास्टर पीस रचना है। जो अन्य कहानियों में भी विशेष रूप से मध्यवर्गीय समाज का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत हुआ है।'[2]

वे एक ऐसे सजग कथाकार थे जिन्होंने अपनी रचनाओं में सामाजिक यथार्थ को पूरी जीवंतता के साथ अभिव्यक्त किया है। इन्होंने अपनी कहानियों में आदर्श प्रेम, समर्पण, उदात्त भावों के साथ-साथ टूटते-बदलते मानवीय मूल्यों, मध्यवर्गीय जीवन, साम्प्रदायिकता, धार्मिक पाखंड, न्याय व्यवस्था, व्यवसायिकता आदि पर तीव्र प्रहार किया हैं। इस सन्दर्भ में नामवर सिंह लिखते हैं-"सादगी और सहजता भीष्म साहनी जी की कहानी कला की खूबियाँ है, जो प्रेमचंद के अलावा और कहीं नहीं दिखाई देती है। जीवन की विडम्बना पूर्ण स्थितियों की पहचान भी भीष्म साहनी में अप्रतिम है। यह विडम्बना उनकी अनेक अच्छी कहानियों की जान है। चाहे वह 'चीफ़ की दावत' हो या 'वाङ्‌चू', 'त्रास' हो या 'अमृतसर आ गया है' यह विडम्बना की ही कहानी की शक्ति है।"[3] भीष्म साहनी द्‌वारा कृत 'चीफ़ की दावत', 'त्रास', 'वाङ्‌चू', 'गंगो का जाया', 'निशाचर', 'पाली', 'अमृतसर आ गया', 'ओ हरामजादे', 'समाधि भाई रामसिंह', 'सागमीट', 'फ़ैसला', 'मुर्गी की कीमत', 'झुटपुटा', 'आवाजें' आदि कहानियाँ प्रमुख हैं जिनमें सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई हैं।

भीष्म साहनी हिन्दी साहित्य के प्रतिभाशाली संवेदनशील कहानीकार है, उनकी कहानी कला को देखते हुए प्रसिद्ध समीक्षक राजेन्द्र यादव लिखते है-"आज का कहानीकार अपनी कला के प्रकृति के अनुसार नवयुगीन संवेदनाओं को प्राप्त करते हुए नवीन समस्याओं से लोहा लेते हुए नित नवीन से जूझ रहा है।"[4]

समकालीन दौर में आज मध्यमवर्गीय व्यक्ति की लालसाएं दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। जो उसके पास है उससे संतुष्ट नहीं होता बल्कि वह अधिक से अधिक भौतिक सुविधाओं की इच्छा अपने मन में रखता है। मध्यमवर्गीय व्यक्ति की यह चाह आज समाज में अवसरवादिता को बढ़ावा देने का काम कर रही है।

'चीफ़ की दावत' मध्यवर्गीय जीवन की एक महत्वपूर्ण यथार्थवादी कहानी है। जिसका मुख्य उद्देश्य मध्यमवर्गीय व्यक्ति की अवसरवादिता एवं उसकी महत्वाकांक्षा में पारिवारिक रिश्ते के विघटन को उजागर करना है। मध्यम वर्ग का व्यक्ति हमेशा उच्च वर्ग में शामिल होने के अवसरों की तलाश में रहता है, चाहे वह स्वयं निम्न वर्ग से मध्यवर्ग में पंहुचा हो। इस कहानी का नायक शामनाथ दफ्तर की नौकरी पाकर उच्च पद पाने की महत्वाकांक्षा रखता है और जिसकी पूर्ति के लिए वह अपने दफ्तर के विदेशी चीफ़ अर्थात अपने मालिक की चापलूसी एवं ख़ुशामद में लगा रहता है।

युवा पीढ़ी के संवेदनशील व्यवहार को इस कहानी में दर्शाया गया है। साहनी जी सामाजिक यथार्थ से जुड़े कथाकार थे, जिन्होंने शामनाथ के माध्यम से शिक्षित वर्ग के अशिक्षित आचरण को इस कहानी में चित्रित किया है।अपने चीफ़ को खुश करने के लिए शामनाथ अपने घर पर एक दावत रखता है। चीफ़ की दावत का प्रबन्ध करते समय उसे अचानक अपनी बूढी माँ का ख्याल आता है, जिसके उपरांत वह अपनी माँ को इस दावत से दूर रखने के प्रयत्न में उनकी उपेक्षा करता है। स्वार्थी बेटे की स्वार्थी भावनाओं को कहानी के माध्यम से उजागर किया गया है। शामनाथ की महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए माँ के साथ उसका खून का रिश्ता भी गौण

हो जाता है और चीफ़ की दावत के समय बूढी माँ प्रदर्शन योग्य वस्तु नहीं, बल्कि कूड़े की तरह कहीं छिपाने की वस्तु हो जाती है। जब घर का फालतू सामान अलमारियों के पीछे रख दिया जाता है तभी अचानक शामनाथ को माँ का ख्याल आता है और वह अपनी पत्नी की ओर मुड़कर अंग्रेजी में कहते है कि, "माँ का क्या होगा?" श्रीमती काम करते करते ठहर गई और थोड़ी देर सोचने के बाद बोलीं - "इन्हें पिछवाड़े इनकी सहेली के घर भेज दो, बेशक वहीं रहें। कल आ जाए।"[5]

भीष्म साहनी की इस कहानी में माँ घर के फालतू सामान की तरह है। माँ, बेटे और बहु दोनों के लिए एक समस्या है। वर्तमान में शिक्षित वर्ग के लिए जो उपयोगी या लाभकारी नहीं है, उनके लिए उसका कोई महत्त्व नहीं है। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी के माध्यम से भीष्म साहनी ने मध्यवर्ग के चित्र और चरित्र दोनों को यथार्थवादी नजरिये से प्रस्तुत किया है।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में निम्न वर्ग की स्थिति बेहद ही दयनीय है। इस वर्ग को हमेशा किसी न किसी समस्या से जूझना ही पड़ता है, जिसमें प्रमुख रूप से इनके जीवन में आर्थिक विपन्नता का होना है। इन्हें आर्थिक संकट से बचने के लिए हर हाल में अपना काम करना ही पड़ता है ताकि ये अपनी जीविका को चला सके। इस आर्थिक संकट से निम्न वर्ग में सम्मिलित स्त्रियाँ भी नहीं बच पातीं और उन्हें भी मजबूरन अपनी पारिवारिक समस्याओं को देखते हुए कोई न कोई कार्य करना ही पड़ता है। परन्तु समाज निम्न वर्ग की इन स्त्रियों को केवल भोग की वस्तु समझता है जिस कारण इनकी स्थिति बेहद ही दयनीय बनी रहती है। भीष्म साहनी 'गंगो का जाया' कहानी में गंगो के माध्यम से निम्न वर्गीय पारिवारिक और सामाजिक जीवन को दर्शाते हुए स्त्रियों की मार्मिक दशा को व्यक्त किया है, वहीं दूसरी ओर गंगो के छः साल के बेटे रिसा द्वारा दिहाड़ी मजदूरी और स्वरोजगार में लगे कम उम्र के बच्चों का यथार्थ चित्रण भी इस कहानी में भीष्म साहनी ने किया है। कहानी में गंगो जहाँ काम कर रही होती है वहाँ ठेकेदार गंगो को काम से केवल इसलिए निकाल देता है कि वह गर्भवती है और पूरा काम नहीं कर सकती। ठेकेदार गंगो से कहता है कि, "खड़ी देख क्या रही है ? जो पेट

निकला हुआ था, तो आई क्यों थी ?... पहले पेट खाली करके आओ, फिर काम मिलेगा।"[6] इस स्थिति पर ठेकेदार जिस तरह तीखे शब्द बोलता है, वह किसी भी स्त्री को अपमानित करने के लिए काफी है।

गंगो के इस तरह काम छूट जाने से उसके घर की स्थिति इतनी बिगड़ जाती है कि उसे अपने बेटे रिसा को काम पर भेजना पड़ता है, जबकि उसकी उम्र केवल छः वर्ष की ही होती है। अतः भीष्म साहनी इस कहानी के माध्यम से समाज में एक निम्नवर्गीय स्त्री की दशा को व्यक्त करते हुए निम्न वर्ग की आर्थिक स्थिति का भी यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करते हैं। सागर मीट कहानी में नौकर के प्रति मालिक की क्रूरता को व्यक्त किया गया है।-"कुत्ते के मुँह में हड्डी दिए रहो तो नहीं भूँकेगा सत्तर रुपए पर इसे रखा था, अब सौ लेता है।फिर भी इसके तेवर चढ़े रहते है।"[7]

भीष्म साहनी विभाजन की त्रासदी का यथार्थ चित्रण भी अपनी रचनाओं में करते नजर आते है। लेखक ने साम्प्रदायिकता की भीषण आग को स्वयं अपनी आँखों से देखा था। साम्प्रदायिकता समाज का ऐसा पहलु है जिसे हर कोई नहीं देख सकता। साहनी जी की कहानी 'अमृतसर आ गया है' भारत के विभाजन की विभीषिका को व्यक्त करने वाली एक बहुत सशक्त एवं संवेदनाओं से युक्त मार्मिक कहानी है, जिसमें त्रासद परिस्थितियों में व्यक्तियों के मनोविज्ञान का बड़ा मार्मिक चित्रण किया गया है। इस कहानी में इन्होंने देश विभाजन के दौरान दो सीमाओं पर बैठे लोगों की साम्प्रदायिक वैमनस्य से उपजी घृणित मानसिकता का मार्मिक चित्रण किया है। परिवेश बदलते ही मनुष्य की मानसिकता बदल जाती है। भय हिंसा में, हिंसा भय में परिणत हो जाती है। यही कारण है कि कहानी में पाकिस्तान से निकली रेल गाड़ी जब हिन्दू-बहुल प्रदेश में पहुँचती है तो दुबला बाबु प्रसन्न हो उठता है और वह दुबला बाबु शेर बन गया; वहीं जो पठान पाकिस्तान में शेर बन रहे थे, वे अब भीगी बिल्ली बन बैठे। साम्प्रदायिकता की मन:स्थिति का प्रभाव हम कहानी की इन पंक्तियों में स्पष्ट देख पाते है, "मुझे लगा जैसे अपनी जगह बैठे सभी मुसाफिरों ने अपने आसपास बैठे लोगों का जायजा ले लिया है। सरदार जी उठकर मेरी सीट पर आ बैठे। नीचे वाली सीट पर बैठा पठान अपने दो साथी पठानों के साथ

ऊपर वाली बर्थ पर चढ़ गया। यह क्रिया शायद रेलगाड़ी के डिब्बों में भी चल रही थी। डब्बे में तनाव आ गया। लोगों ने बतियाना बंद कर दिया। तीनों पठान ऊपर वाली बर्थ पर एक साथ बैठे चुपचाप नीचे की ओर देखे जा रहे थे। सभी मुसाफिरों की आँखें पहले से ज्यादा खुली-खुली ज्यादा शंकित सी लगी। यही स्थिति संभवतः गाड़ी के डिब्बों में व्यक्त हो रही थी।"[8]

इस कहानी के माध्यम से कहानीकार भीष्म साहनी ने देश के बँटवारे से फैले खूनी साम्प्रदायिक दंगे, शरणार्थियों के काफ़िले, विस्थापितों की समस्या आदि का यथार्थ चित्रण किया है। नया भाव बोध नई कहानी की आत्मा है, जिसमें जीवन के नए सत्यों का उद्घाटन है,अर्थात समकालीन कहानी जीवन के एक संश्लिष्ट खण्ड में व्याप्त सम्वेदना की कहानी है। भीष्म साहनी भी समकालीन कहानीकार है । उनकी कहानियों में समाज की रूढ़िवादिता का भी चित्रण किया गया है। समाज में लोग धार्मिक अंधविश्वास से ग्रस्त है जिससे इनका बाहर निकल पाना कठिन ही लगता है। धार्मिक अन्धविश्वास लोगों में भय का संचार करता है और यही भय समाज में धार्मिक पाखंडों को भी बढ़ावा देता है; जो किसी भी समाज के लिए हितकारी नहीं है। भीष्म साहनी कृत 'समाधि भाई रामसिंह' कहानी में लोगों का चमत्कार एवं धार्मिक श्रद्धा पर जो अंधविश्वास है उस पर करारा व्यंग्य किया गया है। कहानी में सामान्य जन को चमत्कारिक संत बनने का अंधविश्वास लोगों में भर दिया जाता है- "जो भाई रामसिंह, अभी तक रामसिंह था, दोपहर तक वह संत बन गया, जिसे दस वर्ष तक किसी ने न पूछा, आज उसी के दर्शन के लिए हजारों लोग एडियाँ उठा-उठाकर झांक रहे थे।"[9]

भीष्म साहनी की कहानियों का मैं भी कभी लेखक के प्रतिनिधि होने का आभास नहीं देता,पात्रों और उनके यथार्थ के साथ उनकी इस एकात्मकता को जो शायद बहुत गहरी तटस्थता से ही सधती है।ऐसे बहुत ही कम लेखकों को चिंहित किया जा सकता है। 'समधि भाई रामसिंह' कहानी में इसका चित्रण किया गया है।

धार्मिक जन रामसिंह की घोषणा से इतने उत्तेजित व उत्साहित होते हैं कि निश्चित समय पर चोला न बदल आने पर पत्थरों व जूतों से उस पर प्रहार करते हैं- "भाई रामसिंह की

भागती काया कभी एक पेड़ के पीछे और कभी दुसरे के पीछे आश्रय ढूंढ़ने लगी। मगर जहाँ वह जाता भक्त वहीं जा पहुंचते। भला भक्तों से भी कोई भाग सका हैं ?... एन सूरज चढ़ते-चढ़ते भाई रामसिंह ने चोला बदल दिया और उसकी इर्द-गिर्द जूतों और पत्थरों का ढेर लग गया था।[10] इस कहानी में समाज में व्याप्त धार्मिक आडम्बरों पर करारा व्यंग्य किया गया है।

भीष्म साहनी ने देश-विभाजन के पूर्व के समाज को देखा, विभाजन की त्रासदी को झेला एवं विभाजन केबाद के बदलते समाज के वे साक्षी रहे। इसलिए इनकी कहानियों में वास्तविकता अधिक है, काल्पनिकता कम है। वे इस मामले में अपने समकालीन एवं परवर्ती कहानीकारों से पृथक दिखते है कि अत्यन्त सहज ढंग से पाठकों के अन्तर्मन में बेचैनी एवं हलचल पैदा कर देते है। ऐसी सहजता जीवन के स्व-भाव से आती है जिसे आप अपने परिवेश के बीचोंबीच रहते हुए अर्जित नहीं करते ,सिर्फ स्वीकार करते है।

समकालीन समाज की न्याय-व्यवस्था भी बेहद ही बिगड़ी हुई है। इस बिगड़ी न्याय-व्यवस्था के कारण ही समाज में व्याप्त निम्न वर्गीय व मध्य वर्गीय लोग अदालतों तक में नहीं जाना चाहते। जिसका कारण है कि न्यायालयों में मुकद्दमों का सही फैसला कम ही आता है। क्योंकि इस समाज की न्याय-व्यवस्था में आज भ्रष्टाचार अधिक फैल चुका है।उच्च वर्ग के लोग गवाह खरीद लेते हैं जिससे की दोषी दोषमुक्त हो जाता है और निर्दोष को सज़ा हो जाती है। भीष्म साहनी ने अपनी कहानी 'फ़ैसला' में समाज की इसी न्याय-व्यवस्था का बहुत ही सूक्ष्म ढंग से चित्रण किया है। कहानी में शुक्ला जी एक ईमानदार व्यक्ति है इसके अतिरिक्त वे न्यायाधीश भी है। शुक्ला जी को हमेशा एक ही डर रहता है कि उनके द्वारा कभी कोई गलत फैसला न हो जाये। जिस कारण ही एक मुकदमा जब उनके पास पहुँचता है तो उसकी सारी कार्यवाही होने के बाद जैलदार को गुनाहगार समझा जाता है। परन्तु फ़ैसला सुनाने से पहले शुक्ला जी स्वयं इस मुक़दमे की जाँच करते है तो उन्हें पता चलता है की जैलदार को फसाया गया है। इस कारण वे जैलदार को छोड़ देते है, परन्तु इसे देख थानेदार खुश नहीं होता और डिप्टी-कमिश्नर से कहकर इस मुक़दमे को हाईकोर्ट तक पहुँचा देता है। जहाँ शुक्ला जी के फ़ैसले को गलत ठहरा दिया जाता है।

अंक-3, खण्ड-2, अप्रैल - जून 2025 E-ISSN : 2584-2900

इस प्रकार कहानी में स्पष्ट है कि एक सरकारी कर्मचारी को वही काम करना चाहिए जो फाइलों तक सीमित हो अर्थात् जो उसके दायरे में आता हो। अगर कोई व्यक्ति इन दायरों से अलग होकर कोई कार्य करे तो उसे ठीक नहीं माना जाता चाहे वह ठीक ही क्यों न हो, "सरकारी नौकरी का उसूल ईमानदारी नहीं है, दफ़्तर की फाइल है। सरकारी अफ़सर को फाइल के मुताबिक चलना चाहिए। "ऐसे चलती है व्यवहार की दुनिया", वह कहने लगा, "मामला हाईकोर्ट में पेश हुआ और हाईकोर्ट ने ज़िला-अदालत के फ़ैसले को रद्द कर दिया। जैलदार को फिर पकड़ लिया गया और उसे तीन साल की कड़ी सज़ा मिल गई। हाईकोर्ट ने अपने फ़ैसले में शुक्ला पर लापरवाही का दोष लगाया और उसकी न्यायप्रियता पर संदेह भी प्रकट किया।"[11] इस प्रकार भीष्म साहनी ने 'फैसला' कहानी के माध्यम से समाज में व्याप्त न्यायिक व्यवस्था पर करारा प्रहार करते हुए वर्तमान समय की न्याय व्यवस्था की यथास्थिति से अवगत कराया है। भीष्म जी की कहानियों के केन्द्र में मानव है।जैसा कि हम जानते है कि मानव एक सामाजिक प्राणी है समाज का सबसे बड़ा सत्य मानव सत्य ही है।उन्होनें अपनी कहानी पाली में उन इंसानी रिश्तों को अधिक महत्व दिया है जो धर्म-सम्प्रदाय,वर्ग और वर्ण की दीवारें लांघकर आदमी और आदमी के बीच एकात्म कायम करता है। संवेदना के जिस बिंदु पर पहुँचकर किसी का धर्म, जाति, सम्प्रदाय सब पृष्ठभूमि में चला जाता है।उजागर होता है, निर्मल-निश्छल अनुभूति का वह रिश्ता, जहां कोई भेद नहीं, दीवार नही।[12]

मानवीय संवेदना को व्यक्त करते हुए वह रुक नहीं जाते।वइसकी पराकाष्ठा तब दिखलाई पड़ती है जब हिन्दुस्तान में रह रहे अपने बेटे अल्ताफ के गम में आँसू बहाने वाली जैनब एक दिन जब अपने आँसू पोंछती हुई शूकर से कहती है-"क्यों जी, ईद पर आएगा न? उसे वे लोग भेजेंगे न ? क्या उससे मिलने जा नहीं सकते? तुम कहते थे न कि तुम्हारा कोई नाती बरेली में रहता है। हम उसके पास जा रहेंगे और बेटे से मिल आएंगे।"[13]

आवाजें कहानी भी इसी संग्रह में है। इस कहानी में विभाजन के बाद आए शरणार्थियों के बसने-बढ़ने की प्रक्रिया का वर्णन बहुत दिलचस्प ढंग से किया गया है। निष्कर्षतः हम कह

सकते हैं कि भीष्म साहनी ने बतौर कथाकार जो रास्ता चुना, उसके आधार परअगर उन्हें पथ-प्रवर्तक कहा जाए तो वह इसलिए होगा कि उसका अनुकरण किसी के लिए सहज नहीं है। भीष्म साहनी की सभी कहानियाँ सामाजिक यथार्थ से जुड़ी कहानियाँ हैं। भीष्म साहनी की कहानियाँ अपने समय की मानवीय संवेदनाओं, रागात्मक संबंधों और जीवन-स्थितियों को व्यापक धरातल पर प्रस्तुत करती हैं। भीष्म साहनी समाज में फैले अंतर्विरोधों, मध्यवर्गीय मानसिकताओं, धार्मिक आडम्बरों, न्यायिक व्यवस्था तथा साम्प्रदायिकता का यथार्थ चित्रण अपनी कहानियों में करते हैं। इनका लेखन सामाजिक जीवन तथा मानवीयता के पक्ष में हर स्तर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए संवेदनशील व्यक्ति को अपने विचारों से आंदोलित करने की क्षमता रखता है। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त सभी आडम्बरों से सामान्य जन को परिचित कराना चाहते थे ताकि सामान्य जन इस आडम्बरों से अपने को दूर रख सके। परन्तु जिस समाज में हम रह रहे हैं उसे पूर्ण रूप से इन आडम्बरों से मुक्त करा पाना असंभव ही हैं। जिसका प्रमुख कारण यह माना जा सकता है कि भारतीय समाज में एकता नहीं दिखाई पड़ती, जबकि बिना एकता के इन सभी आडम्बरों से मुक्ति पाना संभव नहीं हैं। भीष्म साहनी ने अपनी रचनाओं में जीवन का वास्तविक और स्पर्शपरक चित्रण किया है। अतः इन सभी कहानियों के माध्यम से कहानीकार भीष्म साहनी पाठक वर्ग को सामाज में व्याप्त सामाजिक पाखंडों से सचेत व सावधान करना चाहते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ. धनंजय/समकालीन कहानी: दिशा और दृष्टि/पृष्ठ -171
2. डॉ. धनंजय/समकालीन कहानी: दिशा और दृष्टि/पृष्ठ-86
3. डॉ. राकेश कुमार तिवारी/भीष्म साहनी का कथा संसार/पृष्ठ -61
4. राजेन्द्र यादव/ कहानी:स्वरूप और सम्वेदना/ पृष्ठ-125
5. भीष्म साहनी/ पहला पाठ(कहानी संग्रह), ‘चीफ़ की दावत’/पृष्ठ -11
6. भीष्म साहनी/ भाग्यरेखा(कहानी संग्रह), ‘गंगो का जाया’/पृष्ठ -81
7. भीष्म साहनी/ वाङ्चू (कहानी संग्रह),साग मीट/पृष्ठ-29

अंक-3, खण्ड-2, अप्रैल - जून 2025 E-ISSN : 2584-2900

8. भीष्म साहनी/ पटरियाँ(कहानी संग्रह) 'अमृतसर आ गया है'/ पृष्ठ -26
9. भीष्म साहनी/पहला पाठ(कहानी संग्रह), 'समाधि भाई रामसिंह'/पृष्ठ -48
10. भीष्म साहनी/ पहला पाठ(कहानी संग्रह), 'समाधि भाई रामसिंह'/पृष्ठ -51
11. भीष्म साहनी, शोभायात्रा(कहानी संग्रह), 'फ़ैसला', पृष्ठ -62
12. भीष्म साहनी,पाली(कहानी संग्रह),पाली, पृष्ठ-26
13. कृष्णा अग्निहोत्री, स्वन्त्रयोत्नंतर हिन्दी कहानी, पृष्ठ-210

SKU SHODH शोध संचार SANCHAR